अमृतपर्व निदिध्यासन अंक

भगवत् कृपा

स्वामी नारायण

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संगपत्रिका

वर्ष-17, अंक-2-3 शनिवार, 26.2.94	सम्पादक : साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदासजी फरवरी, मार्च 1994	वार्षिक चन्दा-30.00 प्रति अंक : 3.00

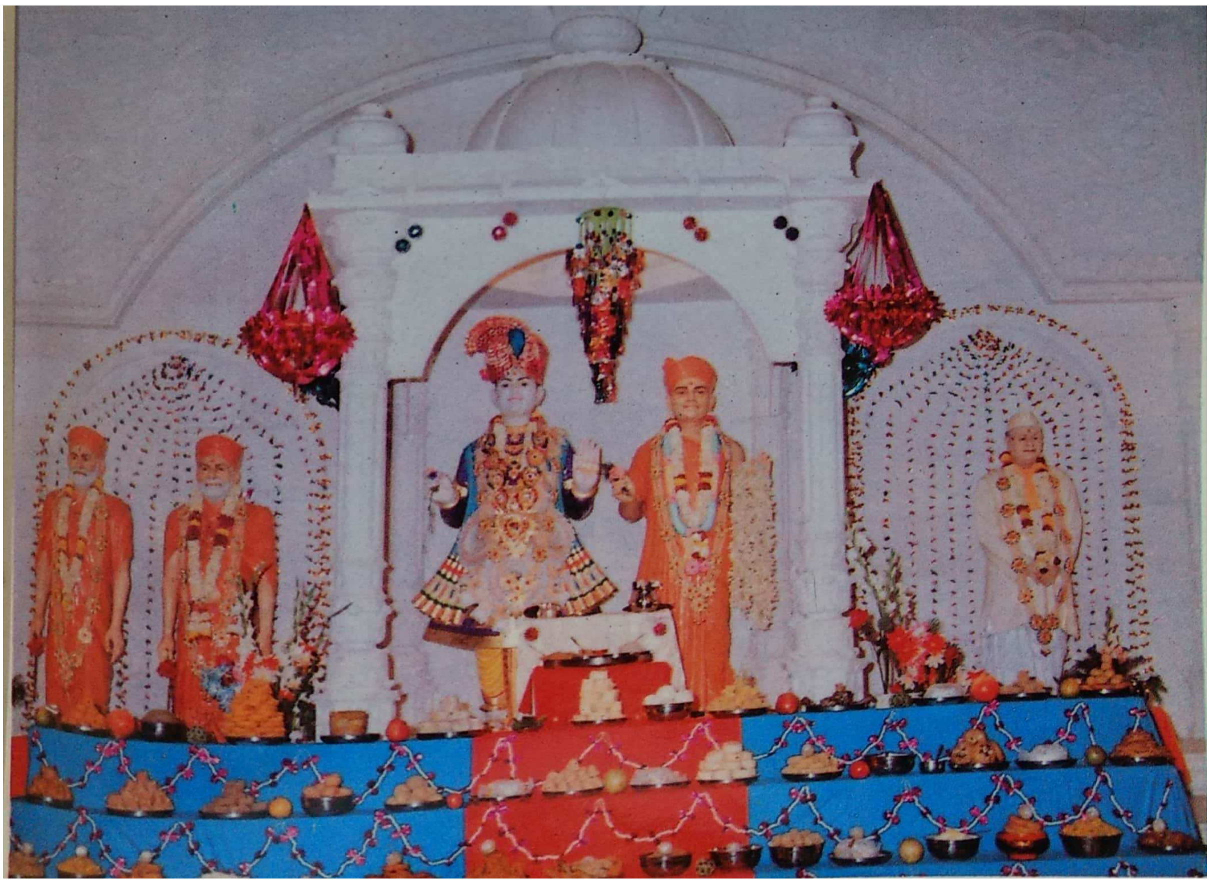

प्रतिष्ठित मूर्तियाँ

भारत की राजधानी दिल्ली में-आरपुरूषोत्तम महाराज की सर्वप्रथम मूर्तिप्रतिष्ठा-
और
गुणातीत समाज के आद्य सर्जक, प्रणेता, प्राणाधार-सुहृद सम्राट प.पू. काकाजी का अमृतपर्व.......

जीवनभर के लिए हृदयपट पर आनंद की छाप छोड़ती दिल्ली मंदिर की मूर्तिप्रतिष्ठा एवं ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी के अमृतपर्व के दिव्य वातावरण में भरी अमर गुणातीत भावना सभी को अपने श्वास-श्वास में महसूस हुई !

महोत्सव के सात दिन पहले से ही नवनिर्मित मंदिर को रंगीन लाइटों द्वारा सजाया था......रात्रि के अंधकार में जगमगाती मंदिर की सुन्दरता हर`क का मन मोह रही थी। मंदिर के आस पास रहने वाले लोग व सड़क से आते-जाते सभी सहज ही जगमगाता मंदिर देखकर बोल उठते वाह ! क्या गज़ब की lighting है..........

मंदिर के मुख्य द्वार और प.पू. काकाजी के 'स्मृतिस्थल' को फूलों से सजाया.....स्मृतिस्थल के आस पास के बगीचों में थोड़ी-थोड़ी दूरी पर boards लगाए हुए थे जिन प.पू. काकाजी की भिन्न-भिन्न मुद्राओं की मूर्ति के नीचे गुणातीत स्वरूपों व मुक्तों द्वारा प.पू. काकाजी का 'दर्शन' कराते उद्‌गार लिखे थे......इन्हें पढ़ कर हरेक कहा हृदय प.पू. काकाजी के प्रति और और नतमस्तक हो जाता था.......स्वयं ही भीतर से प्रार्थना निकल पड़ती थी हे करुणानिधि काकाजी ! आप जिस तरह गुरुहरि योगीजी महाराज के प्रति total समर्पित हो गए.....अल्प संबंध वालों में भी खो गए........वैसे गुण हमें भी बक्शिश में देना..........

महोत्सव के लिए 31 Jan.'94 तक सभी गुणातीत स्वरूप दिल्ली पधार चुके थे.........29 Jan.'94 की सुबह चार बजे पू. गुरूजी स्वयं पू. हरिभाई साहेब को लेने स्टेशन गए......जबकि सब ने कहा भी गुरूजी आप इतनी सुबह-सुबह ना जाओ ! पर वे बोले-'नहीं, मुझे जाना ही है......पू. काकाजी आने वाले होते तो मैं नहीं जाता क्या? पू. काकाजी ही तो इन स्वरूपो द्वारा आज आ रहे हैं !' 31 Jan.'94 की सुबह साढ़े चार बजे पू. दिनकरभाई को लेने भी स्वयं पू. गुरूजी ही airport गए.....उसी दिन दोपहर को भी प.पू. पप्पाजी को लेने airport गए। सच ! दासत्व का मूर्तस्वरूप पू. गुरुजी प.पू. काकाजी के प्रति अपनी भक्ति अदा करने भला कहाँ चूकने वाले थे? वास्तव में तो पू.गुरूजी की उमंग, उनके अपने गुरू के प्रति भक्ति अदा करने अथाह परिश्रम करते देख कर सेवकों को अपने आप बल व प्रेरणा मिल रही थी.........

बहनें प.पू. सोनाबा, पू. बहन को airport लेने गईं.......यह सबसे खुशी की बात थी कि सब की 'माँ' चैतन्यजननी प.पू. सोनाबा 89 year की age होते हुए भी ऐसी ठंड के मौसम में खास इस महोत्सव के लिए आए.......'गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज की राधा रानी' 'गुरूवर्य शास्त्रजी महाराज द्वारा ही किए संकल्प के साकार होने के समय पर उपस्थित ना हो-यह भला कैसे हो सकता है? साथ ही पू. बहन, पू. ज्योति बहन, पू. हंसा दीदी, पू. प्रेम बहन..........

प.पू. काकाजी के प्रति भक्ति अदा करने विदेश से शिकागो मंडल-पू. दिनकरभाई, पू. अंबुभाई वगैरे, पेरिस से पू. प्रवीणभाई लाड़ एवं मंडल लंदन से पू. बापुजी वगैरे तो-बम्बई से पू. गोपाल शर्मा, पू. भरतभाई, पू. महेन्द्र बापू, पू. घनश्यामभाई अमीन, पू. गोरधनदास कापड़िया एवं मंडल, बड़ौदा, सांकरदा, सूरत, माणावदर, जूनागढ़, राजकोट, नागपुर, इटारसी, जयपुर, भदोई, पंजाब, इत्यादि मंडल पहुँच गए थे। बड़ौदा से तो पू. लिखितकर दादा अपनी बैंड पार्टी लेकर-स्वरूपो का स्वागत, सलामी व महोत्सव को स्वरों से गुंजित करने पहले ही आ पहुँचे थे !

तीन दिन के इस महोत्सव के लिए अक्षरज्योति के पास के ground में ही पंडाल बांधा था......यहाँ पर

प.पू. काकाजी को खूब पसंद भावात्मक एकता का संकेत देता symbolic द्वार बनाया था जिसमें सारे गुणातीत समाज योगी डिवाईन सोसाईटी, अक्षरज्योति, अक्षरपुरूषोत्तम केन्द्र सांकरदा, अनुपम मिशन व गुणातीत ज्योत का symbol चिन्ह लगाए थे। और साथ ही सूर्य में प.पू. काकाजी के signature का प्रतीक भी लगाया था। इस द्वार को देखकर पू. दिनकरभाई बोल उठे कि-'**पू. गुरूजी का हर कार्य खूब depth-गहराई लिए हुए होता है....कितना अच्छा idea ढूँढा है यह......**' इस प्रवेश द्वार से थोड़ा आगे जाकर हरिधाम व सांकरदा से आये संतों व सेवकों ने सभामंडप में जाने के लिए खूब परिश्रम से थर्मोकोल के cuttings लगाकर सुन्दर, कलात्मक डिजाईन वाला प्लाईवुड का प्रवेशद्वारा 'अक्षरधाम' बनाया था जिसके दो side मोर का प्रतीक दिया था। सच ही है कि गुणातीत स्वरूपों के सानिध्य मैं बैठना, वह पृथ्वी पर देह रहते हुए अक्षरधाम ही तो प्राप्त हुआ है न?

करीब ढ़ाई हजार से अधिक हरिभक्तों के बैठने की सुविधा के विशाल सभामंडप की छत में गुणातीत ध्वज के रंग की तोरन लगाई थी जिस पर प.पू. काकाजी की मूर्ति, अमृतपर्व के कलश का चिन्ह, प.पू. काकाजी की signature का प्रतीक और योगी डिवाईन सोसाईटी का symbol बना था......मंडप के चारों ओर कपड़े पर हिन्दी और अंग्रेजी में 'स्वामिनारायण-स्वामिनारायण' लिखा हुआ था जिस के बीच-बीच Y.D.S. एवं प.पू. काकाजी के signature वाले सूर्य के चिन्ह थे। उसके नीचे विविध फलों वाले पेड़ चित्रित किये थे। जिनके मूल में प.पू. काकाजी की मूर्ति चित्रित की थी। ये सांकेतिक पेड़ बार-बार हरेक का ध्यान खिंचते थे और सब इसका अर्थ जरूर पूछते.....भावना यह थी कि एक ही वृक्ष पर भिन्न-भिन्न प्रकार के फल लगे हुए हैं और भले उन सभी के taste भी अलग है, पर किसी भी फल के बारे यूं नहीं कहा जा सकता कि यह ज्यादा अच्छा है या यह इस फल से कम है, इस फल का स्वाद इतना अच्छा नहीं है जितना इसका है, सभी बराबर ही है। इसी प्रकार गुणातीत समाज भिन्न-भिन्न मुक्तों से भरा एक फलाफूला पेड़ हैं और इसकी जड़ में प.पू. काकाजी हैं। प.पू. काकाजी के पूरे जीवन का हार्द इस पेड़ द्वारा बताया गया था......गुणातीत स्वरूपों के विराजमान होने के लिए भव्य स्टेज पर आसन लगाए हुए थे। सभामंडप को दो हिस्सों में बांटा था। एक तरफ भाईयों के बैठने की व्यवस्था थी और दूसरी ओर पीछे के हिस्से में बहनों के बठने की व्यवस्था की थी। सभा मंडप के पास ही 'अन्नपूर्णा' में प्रसाद-भोजन की व्यवस्था रखी थी।

1 Feb.'94 मंगलवार की सुबह प.पू. काकाश्री माहात्म्यगान शिविर प्रारंभ हुई......मूर्तिप्रतिष्ठा व अमृत महोत्सव में आए मुक्तों कुछ आध्यात्मिक पूँजी लेकर जाएं.........जीवन को कुछ नवीन सत्य, सूझ, चिरंजीव स्मृति प्राप्त हो यही इस शिविर का उद्देश्य था। पू. लिखितकरदादा के बैंड-बाजों की सलामी ग्रहण करते हुए, तालियों की गड़गड़ाहट से सभी गुणातीत स्वरूप पधारे और आसन ग्रहण करा। वेदगान व धून के मंगलगान से सभा का प्रारंभ हुआ........ प.भ. वच्छराजभाई ने गुणातीत स्वरूपों व देश-विदेश से आए हरिभक्तों का भावभरे दिल से शब्दों के फूलों से स्वागत किया.....स्वामिनारायण धर्म से कुछ भी परिचय न होते हुए, पर पू. गुरूजी व पू. मल्कानी साहेब से एक लगाव सा होने के कारण पू. मल्कानी साहेब के मित्र Mr. Frey खास इस function के लिए हाँगकाँग से दिल्ली आए.......उनके मुख का भक्तिभाव देखकर प.पू. काकाजी के शब्द कानों में गूँज रहे थे कि '**गोरे लोग यहाँ आकर माथा रगड़ेंगे......**' और पू. गुरूजी ने भी Mr. Frey से ही शिविर के उद्‌घाटन का दीपक प्रज्जवलित कराया। Mr. Frey जो कि हिन्दी, गुजराती भाषा से कुछ भी परिचित नहीं थे फिर भी चार-चार घंटे तक वे हर सभा में बैठ कर खूब आनंद अनुभव कर रहे थे।

शिविर की सुबह की सभा में सर्वप्रथम मूर्तिप्रतिष्ठा एवं अमृतपर्व के स्मृति चिन्ह चाँदी की मुद्रा का अनावरण प.पू. सोनाबा के वरद् हस्तों द्वारा हुआ। इस चाँदी की

मुद्रा पर एक तरफ श्री अक्षरपुरुषोत्तम महाराज की मूर्ति और एक तरफ प.पू. काकाजी की मूर्ति है।

इसी के साथ प.पू. काकाजी की आशीर्वाद देती मूर्ति जिस पर उन्हीं का सूत्र-

''आप बापा की हाजिरी मानकर वर्तते हो ?
वे अखंड हाज़िर ही हैं, गये ही नहीं है।
अभी भी हम जो यह बात कर रहे हैं,
वह वे सुन रहे हैं।
तुम्हें नहीं दिखाई देता, मुझे दिखाई पड़ता है।''

लिखा था-इस स्मृति चिन्ह का प.पू. हरिप्रसादस्वामी जी के वरद् हस्तो द्वारा उद्घाटन कराया। शिविर की संध्या की सभा में अतिथि विशेष के रूप में आए दिल्ली के मुख्यमंत्री मा. श्रीमदनलाल खुराना इस महोत्सव की शोभा देखकर व गुणातीत स्वरूपों के सानिध्य को प्राप्त कर खूब आनंदित हुए।

प.पू. काकाजी को 'यज्ञ' खूब पसंद था, सो 2Feb.'94, सुबह अक्षरज्योति की भूमि पर विद्यानगर के पू. शाहभाई के निर्देशन में पंचकुंडी यज्ञ का आयोजन किया था। अहो हो कैसा दर्शन! वातावरण इतना दिव्य-पवित्र लगता था कि बस निहारते रहने का मन करता था। एक मंच पर श्रीजी महाराज, मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी, ब्र.स्व. प.पू. शास्त्रीजी महाराज, ब्र.स्व.प.पू. योगीजी महाराज, गुरुहरि प.पू. काकाजी, गणेशजी, हनुमानजी की संगमरमर की प्रतिष्ठित होने वाली मूर्तियाँ रखी थीं। हवन कुंड के आसपास करीब 75 से अधिक गृहस्थ दम्पतियों के बैठने की खूब सुन्दर व्यवस्था की गई थी. दिल्ली, बम्बई, गुजरात-सौराष्ट्र-महाराष्ट्र, पंजाब, विदेश के गृहस्थ दम्पतियों ने यज्ञ में भाग लिया। 'स्वामिनारायण-स्वामिनारायण' मंत्र लिखित चादरें गृहस्थ भाईयों को ओढ़ाई गईं व सभी दम्पतियों को पुष्पमाला पहनाई गई। प.पू. पप्पाजी, प.पू. सोनाबा, पू. ज्योति बहन, पू. साहेब, पू. हरिभाई साहेब, पू. दिनकरभाई सभी स्वरूपों के मंगल सानिध्य में यज्ञ प्रारंभ हुआ.....मा. श्री उत्तमभाई पटेल (ग्रामीण विकास मंत्री) मुख्य अतिथि के रूप में यज्ञ में उपस्थित थे। पंडितों ने वेदोचारण किए......पू. वशीभाई की प्रार्थना ने तो मानो यज्ञ को जीवंत बनाया..... उपस्थित सभी गुणातीत स्वरूपों ने मूर्तियों की पूजाविधि करके पुष्प अर्पण किए.....प.पू. पप्पाजी, प.पू. सोनाबा सभी ने यज्ञकुंड में आहुति दी। स्वरूपों के बाद भाईयों-बहनों ने आरती उतारी......सात करोड़ लिखित स्वामिनारायण महामंत्रों की यज्ञ में आहुति दी गई। जय-जयनाद से यज्ञमंडप गूंज उठा। जगत को भूलकर सभी खूब आनंदविभोर हो गए थे। और....यज्ञ के बारे हर एक के मुँह से निकल पड़ा.....वाह ! यज्ञ तो जीवन में कभी नहीं देखा। सब के चेहरे अत्यधिक आनंदित थे.....यज्ञ के बाद सब ने प्रसाद लिया।

और......इसके बाद थी शोभायात्रा ! सब को अत्यधिक आनंद इसलिए हो रहा था कि सालों राह देखने के बाद यह दिन आया। बड़े हंसाकार वाहन पर श्रीजी महाराज, मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी, ब्र.स्व.प.पू. शास्त्रीजी महाराज, ब्र.स्व.प.पू. योगीजी महाराज एवं गुरुहरि प.पू. काकाजी की मूर्तियाँ लेकर पू. कोठारी स्वामिजी, पू. शास्त्रीस्वामिजी ठाकुरजी की सेवा में विराजमान थे। शोभायात्रा की शुरुआत में सबसे आगे सफ़ेद कपड़ों में दो घुड़सवार स्वामिनारायण का एवं गुणातीत समाज का ध्वज लेकर चल रहे थे। उनके पीछे दो हाथी,दो ऊँट और बैंड वाले थे और उसके पीछे हंसाकार वाहन था। हंसाकार वाहन के पीछे दो और फूलों से सजे पालकी के रूप में वाहन थे जिसमें प.पू. पप्पाजी, प.पू. स्वामिजी, प.पू. दिनकरभाई, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, प.पू. साहेब, पू. गुरुजी, पू. हरिभाई साहेब एवं पू. मल्कानी साहेब विराजमान थे। इन दो वाहनों के पीछे आनंद करते हुए सभी हरिभक्त चल रहे थे और उनके पीछे 35 लड़कियाँ कलश लेकर चल रही थी। कलश लेकर चलती लड़कियों के पीछे प.पू. सोनाबा, पू. बहन, पू. ज्योति बहन, पू. हंसा दीदी, पू. प्रेम बहन की फूलों से सजी हुई गाड़ियाँ थीं और साथ ही अन्य बहने आनंद करती हुई चल रही थीं। इस विशाल भव्य शोभायात्रा में सभी आनंदविभोर हो कर खूब नाचे.....

सभी जैसे प्रभु की मस्ती के नशे में झूम रहे थे..... प.पू. साहेब की बहन सौ. उर्मिला बहन दिल से बोल उठी-'**हमने सत्संग के आज तक इतने functions attend किए हैं, पर यह दिल्ली का functions तो ओ हो....सच, स्वप्न में भी हम भूला नहीं पायेंगे...... इतना आनंद आया है कि शब्द नहीं.......**' उनकी आँखों के भाव उनके दिल की गहराई से कहे गये भावों की पुष्टि अपने आप कर रहे थे। शोभायात्रा में छुड़ाई गई आतिशबाजी ने इसकी ओर शोभा बढ़ाई और इस प्रकार शोभायात्रा माहात्म्य की स्मृतियों के रूप में सब के चित्त पर अंकित हो गए।

3 Feb.' 94 प.पू. काकाजी का साक्षात्कार दिन और मूर्तिप्रतिष्ठा करने का शुभ दिन......ओहो ! वह दिन जिसकी खूब बेसब्री से सब लोग राह देख रहे थे। गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज के संकल्प का और प.पू. काकाजी द्वारा किए गए अथाह परिश्रम के साकार होने का दिन.........और इस आनंद के माहौल में लगातार वे दृश्य आँखों में आकर पानी ला रहे थे कि सर्दी-गर्मी की परवाह किए बिना प.पू. काकाजी दिल्ली आते रहे....अरे ! कई बार तो दिसम्बर की कड़ाके की ठंड में सुबह चार-चार बजे खुली जीप में दिल्ली से पंजाब के लिए गए.....और इनके ऐसे परिश्रम के फलस्वरूप आज एक नूतन गुणातीत समाज का यहाँ दर्शन हमें हुआ है।

मूर्तिप्रतिष्ठा के शुभदिन सब हरिभक्तों का विशाल समुदाय हृदय में अनोखा आनंद लिए मंदिर के प्रांगण में खड़े होकर स्वरूपों के आगमन की प्रतीक्षा कर रहा था..... भक्तों का आनंद तो जैसे समाता नहीं था। बैंड वालों की सलामी ग्रहण करते हुए गुणातीत स्वरूपों मंदिर के प्रांगण में पधारे......मंदिर की शोभा तो बाहर से ही देखते बन रही थी...... मंदिर की सीढ़ियों पर sides में दोनों तरफ दो गुब्बारों के गुच्छे लगा रखे थे जिसमें से एक गुच्छे की डोर प.पू. पप्पाजी से व एक गुच्छे की डोर प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी से कटवाई और वे रंग-बिरंगे गुब्बारे आकाश में आनंद की लहर फैलाते हुए उड़ गए। गुरुहरि प.पू. पप्पाजी, प.पू. स्वामिजी, प.पू. साहेब, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, प.पू. दिनकरभाई, पू. हरिभाई साहेब, पू. गुरूजी, पू. भरतभाई, पू. महेन्द्र बापु, पू. मल्कानी साहेब और कुछ माननीय हरिभक्त मंदिर के विशाल हॉल जहाँ मूर्तिप्रतिष्ठा करनी थी वहाँ पहुँचे। पू. माधवचरण स्वामिजी (समढ़ियाळा) के भक्तिभाव भरे सुशोभन से शोभित संगमरमर की मूर्तियों के मुख पर एक अनोखा स्मित था, मानो अपने इन पनौते पुत्रों का स्वागत कर रही हों......मंत्रोच्चारण के साथ मूर्तिप्रतिष्ठा विधि का प्रारम्भ हुआ......स्वरूपों ने मूर्तियों की प्राणप्रतिष्ठा करी और अंत में सभी ने मूर्तियों की आरती उतारी। मूर्तिप्रतिष्ठा की यह सारी विधि मंदिर के प्रांगण में एकत्रित भक्तजनों ने close circuit T.V. sets पर शांति से देखी। तत्पश्चात् सभी स्वरूपों की चैतन्यजननी प.पू. सोनाबा-वे तो मूर्तियों को ऐसा निर्निमेष निहार रही थी कि लगता था कि वे साक्षात् स्वरूपों से बात कर रही हों.....प.पू. सोनाबा के पूजन व पुष्प अर्पण करने के बाद पू. बहन, पू. ज्योति बहन, पू. हंसा दीदी, पू. प्रेम बहन, पू. आनंदी दीदी, पू. ललिताबा, पू. दिव्या मासी, पू. योगिनी बहन, पू. प्रतिमा बहन सभी बड़ी बहनों ने मूर्तियों का पूजन किया.....पुष्प अर्पण किए और प्रार्थना करी 'हे प्रभु ! हमारे भीतर की प्राणप्रतिष्ठा करा कर जल्दी पूर्णाहुति करा के हमारा चैतन्य मंदिर भी तैयार करा देना.......'

मूर्तिप्रतिष्ठा विधि के बाद पू. माधवचरणस्वामीजी एवं संतों ने मूर्तियों के समक्ष कलात्मक ढंग से अन्नकूट भोग लगाया......पू. कोठारीस्वामजी एवं पू. दिनकरभाई आदि के वरद् हस्तों द्वारा आरती हुई। दूसरी ओर सब ने सभा मंडप की ओर प्रस्थान किया.. यहां पर प.पू. काकाजी के अमृत महोत्सव की सभा शुरु होने जा रही थी। आज तो मंच का दृश्य बदला हुआ था....बड़े-बड़े पत्थरों की चट्टानों के आकार वाला पीछे पहाड़ जैसा दृश्य दर्शाया था....जिसकी उँचाई पर श्रीजी महाराज, मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी, गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज, गुरुहरि योगीजी महाराज की मूर्तियाँ लगाई हुई थी। मुख्य मंच के बीचोबीच एक

डेरी बनाई हुई थी जिसमें सर्वप्रथम श्रीजी महाराज की मूर्ति और उनके हृदयाकाश में गुरुहरि योगीजी महाराज की मूर्ति व गुरुहरि योगीजी महाराज के हृदयाकाश में समाती ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी की मूर्ति स्थापित करी थी।

उस डेरी के आस-पास सभी गुणातीत स्वरूपों के आसन लगाए थे। एक ओर प.पू. पप्पाजी, प.पू. साहेब, पू. हरिभाई साहेब, पू. मल्कानी साहबे व सभी आमंत्रित महानुभाव थे तो दूसरी तरफ प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, पू. दिनकरभाई व अन्य महामुक्तों विराजमान थे। इस stage के पीछे यह रहस्य दर्शाया था कि प.पू. पप्पाजी, प.पू. काकाजी को हमेशा बुलडोजर कहते है। बुलडोजर यानी जो सामने आने वाली बड़ी से बड़ी चट्टानों को भी तोड़कर रास्ते को समतल कर दे। उसी तरह प.पू. काकाजी ने सामने आने वाली पहाड़ जैसी कठिनाइयों का सामना करा, उन्हें तोड़कर उन्होंने हमारे लिए रास्ते कर दिए। गुरुहरि योगीजी महाराज के वचन को अध्धर झेला; चाहे वह सर्वप्रथम पढ़े-लिखे युवकों को साधु बनाने की कल्याण योजना थी या बहनों को सर्वप्रथम भगवान भजने का मौका देने का क्रांतिकारी कार्य.....और इसीलिए प.पू. काकाजी गुरुहरि योगीजी महाराज के हृदय में बस गए व महाराज को साक्षात पाए। आज की सभा का मुख्य आकर्षण बना था मंदिर के आकार का केक जिसमें 75 यानि प.पू. काकाजी के अमृतमहोत्सव का symbol बनाया था जिसे प.पू. पप्पाजी के करकमलों से कटवाया और उस केक के पीछे की भावना व्यक्त करी कि स्थावर मंदिर की मूर्तिप्रतिष्ठा के साथ-साथ हमारे भीतर में भी अखंड महाराज की मूर्ति स्थापित कर देना....सभी स्वरूपों ने अमृतमहोत्सव निमित्त अपनी परावाणी का लाभ दिया। समग्र गुणातीत समाज के आत्मीय स्वजन प.भ. मल्कानी साहब ने प.पू. काकाजी के अभिप्राय को साकार करने पू. गुरुजी को खूब आत्मीयता से साथ दिया....अतः पू. गुरुजी ने उनके प्रति अपने दिल की भावनाओं को silver plate पर लिखे एक पत्र के रूप में व्यक्त की। पू. त्यागवल्लभ स्वामी ने वह भावना पत्र जब सभा में पढ़ा तो उन मार्मिक भावनाओं को सुनकर सभी का हृदय भावविभोर हो गया और कईयों की आँखें भर आई। ऐसा ही लगता था मानो इस पत्र में पू. गुरुजी ने अपना पूरा दिल निचोड़ दिया हो। साथ ही प.भ. नवीनभाई, जिनका प.पू. काकाजी के प्रति समर्पण सभी के लिए एक आदर्शरूप है व जिनके भक्ति भरे परिश्रम से मूर्तिप्रतिष्ठा का कार्यक्रम सम्पन्न हो पाया...क्योंकि यदि वे एक महीने से अपना घर-धन्धा छोड़कर मूर्तियों के लिए जयपुर जाकर नहीं रहते तो इस बार भी मूर्तियाँ बननी मुश्किल थीं और उत्सव फिर तीसरी बार भी शायद रद्द करना पड़ता। दिन-रात देह की, भूख-प्यास की परवाह किये बिना प.भ. नवीनभाई वहाँ रहे। उनकी भक्ति के सम्मुख हम सभी का हृदय नतमस्तक हो गया था। सो पू. गुरुजी ने प.भ. नवीनभाई के प्रति भी अपने दिल के भावों को व्यक्त करा और प.भ. नवीनभाई को प.पू. पप्पाजी द्वारा शाल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया। सच ! प.भ. मल्कानी साहब व प.भ. नवीनभाई ने अपने अलग-अलग ढंग से पू. गुरुजी को खूब साथ देकर गुणातीत समाज के लिए एक आदर्श स्थापित कर दिया।

3Feb की इस सभा में दिल्ली के गवर्नर मा. श्रीपी.के.दवे साहब का अतिथि विशेष रूप में आना एक सांकेतिक घटना बन गई....पू. गुरुजी ने दिल्ली में प्रतिष्ठित महाराज की मूर्ति देखते ही कहा था कि महाराज के मुखारविंद पर प्रसन्नता व करूणा दोनों भाव एक साथ दिखाई देते हैं। चूंकि इस मूर्तिप्रतिष्ठा के मौके पर दिल्ली के गवर्नर मा. श्री पी.के.दवे साहब उपस्थित थे और जब उनका पूरा नाम पता चला कि प्रसन्नवदन करूणाशंकर है तो आश्चर्य हुआ कि पू. गुरुजी ने जो दो भाव महाराज की मूर्ति में बताए वह गवर्नर साहब का नाम है। इससे भी अधिक गवर्नर साहब की उपस्थिति से प.पू. काकाजी की एक बात सहज ही याद आ गई ! वे बचपन में बोला करते

थे कि **"मैं दिल्ली का गवर्नर बनूंगा।"** वे स्वयं तो अक्षरधाम के गवर्नर बने और दिल्ली मंदिर की मूर्तिप्रतिष्ठा के समय दिल्ली के गवर्नर के रूप में मा.श्री पी.के. दवे साहब को उपस्थित रखा-कैसी सांकेतिक घटना बन गई ! सभा में उपस्थित माननीय स्वजन-श्री एच.के.एल.भगत साहब, श्री सनतभाई महेता, श्री आर.डी.पटेल साहब ने प.पू. काकाजी के साथ के उनके संबंधों, भावों को व्यक्त कर एक विशेष परिचय दिया। आश्चर्य की बात तो यह हुई कि सभा ढ़ाई बजे क चली लेकिन सभी खूब शांति से बैठे रहे जिससे मुमुक्षुओं की कुछ पा लेने की गरज और प.पू. काकाजी के प्रति अनोखी प्रीति का दर्शन हो रहा था। सच ! 3 Feb. का यह भव्य दर्शन ही तो जीवनभर की अनमोल स्मृतिरूप बन गया....सदा ही यह दर्शन जीवन की प्रत्येक पल, प्रत्येक सैकण्ड में अनुसंधानरूप में बना रहे.....

कल्पना से पर ही यह महोत्सव मनाया गया और यह सच है कि प्रभुस्वरूप प.पू. काकाजी ने नैपथ्य की डोरी के संचालन से बाहरी आयोजन तो सरल बने और आतंरिक रूपांतर के गढ़ सहजता से जीते..... हरिधाम-सोखड़ा व सांकरदा से पू. प्रेमस्वामी, पू. ज्ञानस्वरूपस्वामी, पू. भगवतस्वरूप स्वामी, पू. कोठारीस्वामी (सांकरदा), पू. गुरुजी, पू. आचार्य स्वामी, पू. ब्रह्मानंदस्वामी वगैरे संतों एवं सेवकों, ब्रह्मज्योति के भाईयों, बम्बई के युवकों, माणावदर से पू. वशरामभाई व मंडल, पू. प्रेमस्वामी की आज्ञा से जयपुर मंडल इस महोत्सव की सेवा में खूब आत्मीयता व अपनेपन से सेवा करने पहले ही पहुँच गए। पू. त्यागवल्लभस्वामी जिन्होंने सभाओं का संचालन कर हमें निश्चिंत कर दिया था.....अपनी मार्मिक व अनूठी भक्तिभाव वाली भाषाशैली से महोत्सव में रंग भर दिया। खास कर तो m/s महाराजालाल एण्ड सन्स के प.भ. माथुर साहेब ने सभा के पब्लिक एड्रेस सीस्टम की सेवा के साथ-साथ स्वयं के समय का भी जो योगदान दिया वह उनके भक्ति भरे दिल का परिचय दे गया... अशोकविहार Police Station के S.H.O. श्री पी.पी. सिंह व उनके सहयोगियों ने तीन दिन के इस function में सुरक्षा, शांति व्यवस्था बनाए रखने जो अपना सहकार दिया, उसके लिए भी हम खूब-खूब आभारी है।

दूसरी बात-दिल्ली समाज में पहली बार ही उठाया गया ऐसा विशाल कार्य जो मुट्ठी भर सेवकों के द्वारा होना शक्य ही नहीं था......लेकिन दिल्ली का हर एक सेवक प.पू. काकाजी के प्रति मर-मिटने की भावना से पू. गुरुजी के वचन को लेकर पू. विनय जीवनस्वामिजी, पू. स्नेहलस्वामी, पू. सुहृदस्वामी एवं पू. प्रभाकर भाई, पू. निष्कामभाई, पू. चड्डाजी, पू. विपनजी आदि के संग 'सेवायज्ञ' में जुट गया था तो दूसरी ओर पू. आनंदी दीदी की प्रेरणा व मार्गदर्शन में अक्षरज्योति की साधिकायें व गृहस्थ भाभियाँ एवं बहने अत्यंत अनुशासित ढंग से अनोखे उमंग-उत्साह से समर्पित होकर लग पड़ी थी। धर्मशालाओं में भक्तों की सेवा के लिए रखे गए सेवकों ने तो मंदिर आकर सभामंडप भी नहीं देखा था। केवल पू. गुरुजी द्वारा सौंपी सेवा.....दिल्ली के सभी भाईयों-युवकों ने दिन-रात, भूख-प्यास, नींद-देह को गिने बिना खड़े पांव सेवा में रहकर खूब स्थिरता से सेवा संभाली.........और इस सब से खूब खुश होकर उत्सव समाप्त होने के बाद एक घरेलू सभा में पू. गुरुजी एक उदाहरण देते हुए बोले-"नेपोलियन के पास मुट्ठीभर सिपाही थे फिर भी उसकी जीत होती थी, तो एक बार एक व्यक्ति ने पूछा कि तुम्हारे पास सिपाही भी कम है फिर भी सफलता मिलती है, उसका क्या राज है? नेपोलियन ने कहा कि तुम्हें मेरी सफलता का राज पता करना हो तो कल आना। दूसरे दिन उसे लेकर नेपोलियन समुद्र के किनारे पर गया और वहां उसने दिखाया कि उसके सिपाही नेपोलियन के आदेश से रेत का रस्सा बनाने की कोशिश कर रहे थे। जबकि यह तो स्पष्ट है कि रेत का कभी भी रस्सा बन ही नहीं सकता। तब नेपोलियन बोला कि यह मेरी सफलता का राज है।" यह उदाहरण देते हुए पू. गुरुजी बोले कि celebration की सफलता का यह राज है कि हमने जिसे जहां जिस

भी काम के लिए कहा उसने वही करा और सेवा में तत्पर रहा इसलिए मुट्ठीभर लोगों से भी यह उत्सव चकाचौंध कर देने वाला बन गया !

और......सबसे अधिक आश्चर्य यह कि प्रभुस्वरूप प.पू. काकाजी जैसी विभूति के प्रति अपनी भक्ति अदा करने प्रकृति भी पीछे नहीं रही.......हर साल इन दिनों खूब ठंड होती है, तो हम सब सोच रहे थे कि गुजरात व बम्बई से आने वाले हरिभक्तों को खूब ठण्ड लगेगी.....परेशानी होगी। पर तीनों दिन मौसम ऐसा रहा कि न अधिक सर्दी न ही गर्मी........इससे भी अधिक एक बार सारी दिल्ली में बारिश भी गिरी पर महोत्सव का स्थान सुरक्षित रहा......और इसका प्रमाण भी मिला कि function का सारा काम-पंडाल, मंडप वगैरा उतर गया.......बर्तन इत्यादि भी व्यवस्थित धूप आदि में धूलकर-सुखकर pack हो गए...अधिकतर भक्तों भी अपने घर वापिस पहुँच गए उसके बाद 6 Feb. की सुबह तेज बरसात हुई और सर्दी भी बढ़ती गई। हम सब तो आश्चर्यचकित होकर प्रभुस्वरूप प.पू. काकाजी द्वारा अनुभव कराई इस लीला के विचारों में ही निमग्न रहे......बस धन्यवाद ! धन्यवाद !.......इसके सिवा कोई शब्द ही सूझता नहीं.....

प.पू. काकाजी........जिन्होंने गुणातीत समाज की चारों पंखुडियों-संतों, बहनों, युवकों और गृहस्थों को पाला-पोसा और माली बनकर जतन किया......जीव के सच्चे राहबर बनकर अनंत गुनाह माफ करके केवल निर्दोषभाव और सुहृदभाव प्रार्थना से सबको अपने जैसा बनाने अवतरित छुपा परिश्रम किया........जिनका आशीर्वाद-**'जाओ अब तक का सब माफ.....तुम्हारे सब पाप मुझे दे दो।'** उस विभूति के अमृतपर्व पर भक्ति अदा करने सब इकट्ठे हुए ....और..........इस महोत्सव का एक रहस्य तो गुरूजी द्वारा एक घरेलू सभा में पता चला जब उन्होंने पूछा-अमृतपर्व के इस function की विशेषता क्या-बताओ? फिर स्वयं ही उत्तर देते हुए बोले कि 'इस उम्र में प.पू. बा विद्यानगर से यहां तक आये। तीन दिन-हर समय की चार-चार घंटों की सभा में सुबह-शाम regular आए और शोभायात्रा के समय भी पूरा time गाड़ी में बैठे रहे........मानों प.पू. काकाजी का ऋण चुकाने ही वे इस function में आई हों।'

हे काकाजी ! हमें ऐसा बल-बुद्धि-शक्ति देना कि हमारे विचार से आपको निरंतर-निश्चिंता रहे-function अद्भुत हो जाए-वह जरूर आपके प्रति भक्ति अदा करने की हमारी भावना थी पर इससे अधिक विशेष तो जो आप मूर्ति में रहकर हर क्रिया करने की, मिलजुल कर रहने की, सर्वदेशीयता से उठाव लेने की, भावात्मक एकता से जीने की जो आपकी हम से अपेक्षाएँ थी......उस रास्ते पर चलना—वह सच्चा अमृतपर्व है और हम जानते हैं कि आपकी प्रसन्नता भी उसी में है.....बस ! वही प्रसन्नता हम प्राप्त कर लें यही प्रार्थना !

सम्पादक- पू. भाईस्वामी

★ ★ ★

अमृतपर्व पर मार्मिक भावात्मक उद्गारों..........

(1 फरवरी'94 मंगलवार के महामंगलकारी दिन पर हुई प.पू. काकाजी माहात्म्यगान शिविर व 3 फरवरी'94 को प.पू. काकाजी के साक्षात्कार दिन पर ही अमृतमहोत्सव की सभा जिसे सब ने अक्षरधाम की सभा समान अनुभव किया..... तब किये गये भगवत्स्वरूप स्वरूपों, संतों व एकांतिक मुक्तों के प्रवचनों का सार यहां देने का अल्प प्रयास किया है, ताकि सभी को इस महोत्सव की चिरंजीव स्मृति रहे........जीवंत प्रेरणा मिलती रहे और सभी महिमा की इस गंगा में स्नान करके प्रगट स्वरूपों के रूप में मिली मौज की धन्यता अनुभव कर सकें.........)

मैं सत्संग में पू. काकाजी के कारण आया। पू. काकाजी की सब से अधिक चीज मुझे स्पर्श कर गई हो तो वह यह कि उन्होंने संतों को तैयार किये। सोखड़ा मंदिर शुरू हुआ, प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी ने संभाला और पू. काकाजी उन्होंने सौंपकर बाहर निकल

गये। पू. पप्पाजी व पू. काकाजी ने विद्यानगर में गुणातीत ज्योत शुरू करी, फिर वहां का सारा पू. पप्पाजी को सौंपकर वे वहां से निकल गये। पू. अक्षरविहारी स्वामिजी ने जैसे ही सांकरदा मंदिर संभाला वहां से भी पू. काकाजी निकल गये। पू. काकाजी कहीं बंधे नहीं रहे। इन्होंने विभूतियाँ तैयार करी....संतों को तैयार करे। यह उनकी महानता थी।

पू. काकाजी में अनोखा साहस था। वे कहीं भी चले जाते थे। वे पैरिस गये, कोन्टीनन्ट गये, इंग्लैंड गये, अमेरिका गये। वह पू. काकाजी थे जिन्होंने अमेरिका में Real सत्संग की शुरूआत करवाई और पू. दिनकरभाई उनका सर्जन है। यूं पू. काकाजी ने कई केन्द्रों की शुरूआत करवाई, संतों को तैयार करे-प्रोत्साहन दिया-उनका आध्यात्मिक विकास करा, फिर वहां से निकल गये।

मुझे विश्वास है कि वे जरूर खूब खुश होते होंगे उन सभी को देखकर जो खूब अच्छी तरह गुणातीत समाज और स्वामिनारायण भगवान के लिए कार्य करते हैं। यह उनकी महानता है। वे किसी स्थान में बंधे नहीं रहे। उनकी यह बात मुझे पसंद आई है।

उनके अनोखे ढंग को हम सभी जानते हैं। बहुत बार मैंने उन्हें कई चीजों के लिए challange किया, पर आखिर मुझे ही complete समर्पित होना पड़ा।

इस बात का मुझे गर्व है कि मैं पू. काकाजी जैसी विभूति के प्रति संपूर्ण समर्पित हुआ-जिसने मुझे पू. पप्पाजी के साथ कार्य करने train करा...... पू. पप्पाजी से जुड़ने-पू. पप्पाजी, पू. स्वामिजी, पू. साहेब के साथ समर्पित होने पू. काकाजी ने ही मुझे जोड़ा।

मैं मेरा सौभाग्य मानता हूँ कि भगवान स्वामिारायण के प्रति भक्ति रखकर मुझे जीना मिला।

.......हर एक में अच्छाई देखो, Think positiverly, look positively, अच्छाई के सिवा और कुछ देखो ही नहीं-इस बात की इन्होंने हमें training दी। सबसे बड़ी यही बात मैंने पू. काकाजी से सीखी......हर एक के अच्छे गुण ही देखो और जीवन का आनंद लूटो।

-पू.डॉ.आर.डी. पटेल साहब, वल्लभविद्यानगर

★ ★ ★

1969 में मुझे दिल्ली भेजन से दो-तीन दिन पहले पू. काकाजी ने मुझे बड़ौदा के प.भ. भीखाकाका के यहां कहा-

'देखो, यह मेरा संकल्प नहीं, मैं तुझे नहीं भेज रहा, यह शास्त्रीजी महाराज का संकल्प है और इसलिए मैं तुम्हें भेज रहा हूँ। तुम मेरी यह बात रख लोगे तो तुम्हारे में ऐसी साधुता आयेगी जिसके फलस्वरूप तुम्हारे सम्पर्क में आने वाले लोगों को सुख, शांति, और आनंद अपने आप मिलता रहेगा......'

फिर 1985 में last पू. काकाजी दिल्ली आए.... तब बोले थे-

मुकुंद.......तूने मेरे जैसे mystic आदमी का भरोसा करा तुम निहाल हो गया।

'मुझे तेरे पर लीला अनुग्रह करना है.....' फिर प.भ. भीखाकाका के घर सालों पहले कही वह बात याद करके कहा कि 'मैंने तुझे कहा था-'बक्षीश देनी है, लीला अनुग्रह करना है।'

हमने पू. काकाजी को हमारे मायिक चक्षु से देखे..... असली परमपद को पाए हुए संतों, पप्पाजी, स्वामिजी जिन्होंने पू. काकाजी को कोई अलग भावना, अलग status से देखे हुए हैं........इनकी बातों से जो हमें पू. काकाजी का दर्शन होगा वही सच्चा दर्शन रहेगा... तो, महाराज-सभी सभी गुणातीत स्वरूपों हमें ऐसा स्थिर मन दें कि एकचित्त से इनकी कथा हम सुन पाएं।

–पू. गुरूजी

★ ★ ★

सचमुच यहां का वातावरण देखकर, यहां भक्तों का भाव देखकर हर कण-कण में काकाजी प्रगट हैं ऐसी अनुभूति पाकर दिल ऐसा उभर जाता है कि वाणी स्तब्ध हो जाती है.......

शास्त्रीजी महाराज ने जो आशीर्वाद नंदाजी को दिए कि उत्तरभारत में स्वामिनारायण भगवान का सन्देश फैलाना-महाराज जैसा मेरा सुनते हैं वैसा तुम्हारा सुनेंगे.......पर वह आशीर्वाद गुरूजी के पास मूर्तिमान हो गए....पू. काकाजी के वचन से पू. गुरूजी यहां रहे और महाराज का नाम रोशन करने के लिए

पू. गुरूजी ने जो सहकार दिया तो जैसा महाराज शास्त्रीजी महाराज का सुनते थे, ऐसा जरूर आज गुरूजी का भी सुनते हैं और आज पू. काकाजी हमें बता कर गये कि दिल्ली में गुरूजी हमारा ऐसा ambessdor है..........उनके साथ जुड़कर रहना........

पू. काकाजी ने यहां आकर पहले गुणातीत समाज की सूझबुझ देकर ऐसे भक्तगण तैयार किए और जब मौका आया तो यूं चपटी बजाकर यह स्थान बनाया......

हे काकाजी आपकी मूर्ति आज यहां स्थापित हो रही है.........हे काकाजी महाराज आप इस सिंहासन पर तो विराजोगे, साथ-साथ हमारे हृदय सिंहासन पर भी ऐसे विराजमान हो जाओ कि हम हम न रहे इक तेरी आरजू रहे......

–पू. महेन्द्र बापु, बम्बई

★ ★ ★

1952 में योगीजी महाराज ने पू. काकाजी को साक्षात्कार कराया........वहां से लेकर पू. काकाजी महाराज का हर समय योगीजी महाराज की भक्ति के रूप में, उनके भक्तों की सेवा के रूप में-ऐसा चलता ही रहा......1966 में जब Partition हुआ तब काकाजी महाराज ने सारे ये गुणातीत समाज की रचना का पूरा भार अपने कंधे पर उठाया......बहनों की व्यवस्था करनी थी.....भाईयों की व्यवस्था करनी थी। हरिधाम और सांकरदा..........दोनों केन्द्रों की भी व्यवस्था करनी थी। जब उसने देखा कि वहां उनका कार्य पूर्ण हुआ है तब उनकी दृष्टि दिल्ली पर गई और मुकुंदजीवनस्वामी के ऊपर special कृपा करके यहां भेजा......एकांतिक पुरुषों की आज्ञा होती है, आज्ञा के पीछे भगवान की मूर्ति जाती है।

.....ऐसे युगपुरुष अपनी योजना साथ लाते हैं....कार्य करने वाले भी साथ में लाते हैं....बापा ने जो पहला संकल्प किया कि उनके स्वरूप का विज्ञान (पहचान) हो वह काकाजी, पप्पाजी, बा ने झेला। तारदेव से आत्मीयता की गंगोत्री निकली.......बापा ने बोला कि तारदेव अक्षरधाम का तख्त हैं.........

सारे गुणातीत समाज का जो सर्जन है, जो foundation stone है.........नींव की ईंट है वो काकाजी हैं। गुणातीत समाज में ऐसी कोई व्यक्ति नहीं है जिनके जीवन में काकाजी ने काम नहीं किया हो......तो आज यह युगपुरुष की स्मृति करके वे जो हमें बनाना चाहते थे....वैसे हम बन गये हैं? अंतःदृष्टि करके, अपने गुरु बनकर introspection करके जो सुख लेने में दिक्कत करता है.....वही देहभाव है। उसकी यज्ञ में आनंदपूर्वक आहूति दे दें........ऐसा करने का बल, प्रेरणा मिले.......

–पू. हरिभाई साहेब, माणावदर

★ ★ ★

वैसे मंदिर बनाना तो बहुत कठिन बात नहीं है,बहुत लोग पैसे वाले मंदिर बनाते हैं, मगर वो मंदिर बनाने में जो लोग सेवा करते हैं वो सेवा करने वाले और अपने गुरु के वचन से सेवा करने वाले खुद मंदिर बन जाये.......

ये काकाजी महाराज और ये प्रत्यक्ष स्वरूप पप्पाजी महाराज, हरिप्रसादस्वामिजी महाराज इन सब की यही बड़ी से बड़ी योजना है कि वैसे चैतन्य मंदिर बनें.......अपनी गुणातीत प्रणाली है। गुणातीत संत अपने जैसे पारस से पारस बनाते हैं.......इस मंदिर मे जो सेवा करेंगं.......तो वे पप्पाजी महाराज, काकाजी महाराज और स्वामिजी महाराज इनके आशीर्वाद, इनकी कृपा, इनकी प्रसन्नता के पात्र बनेंगे और ये सेवा करके जो चैतन्य मंदिर यह बनाना चाहते हैं वैसे चैतन्य मंदिर हम बने.........

–पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, सांकरदा

★ ★ ★

काकाजी का एक सूत्र था-Life must be struggling......There must be struggle in life...........जीवन में संघर्ष होना ही चाहिए। काकाजी के सारे जीवन का दर्शन जब हम करें तो संघर्ष का दर्शन throughout life उसके जीवन में रहा।

1. भावात्मक एकता का प्रतीकरूप 'अमृतपर्व' प्रवेशद्वार। 2. अमर गुणातीत भावना की अनुभूति कराता 'अक्षरधाम' सभामंडप का प्रवेशद्वार। 3. ज्योत प्रगटाकर 'प.पू. काकाश्री माहात्म्यगान शिविर' का उद्‌घाटन करते हुए हाँगकाँग के श्री फ्रे। 4. शिविर की सायं सभा को सम्बोधित करते हुए हमारे मुख्य अतिथि दिल्ली के माननीय मुख्यमंत्री श्री मदनलाल खुराना साहेब।

1. प्रतिष्ठित होने वाली मूर्तियों के समक्ष यज्ञ मंडप में भावपूर्ण हृदय से दर्शन-प्रार्थना करती गुणातीत समाज की चैतन्यजननी प.पू. सोनाबा। 2. यज्ञ के मुख्य अतिथि के रूप माननीय श्री उत्तमभाई पटेल। 3-4. यज्ञेन यज्ञमयजन्ताः.......

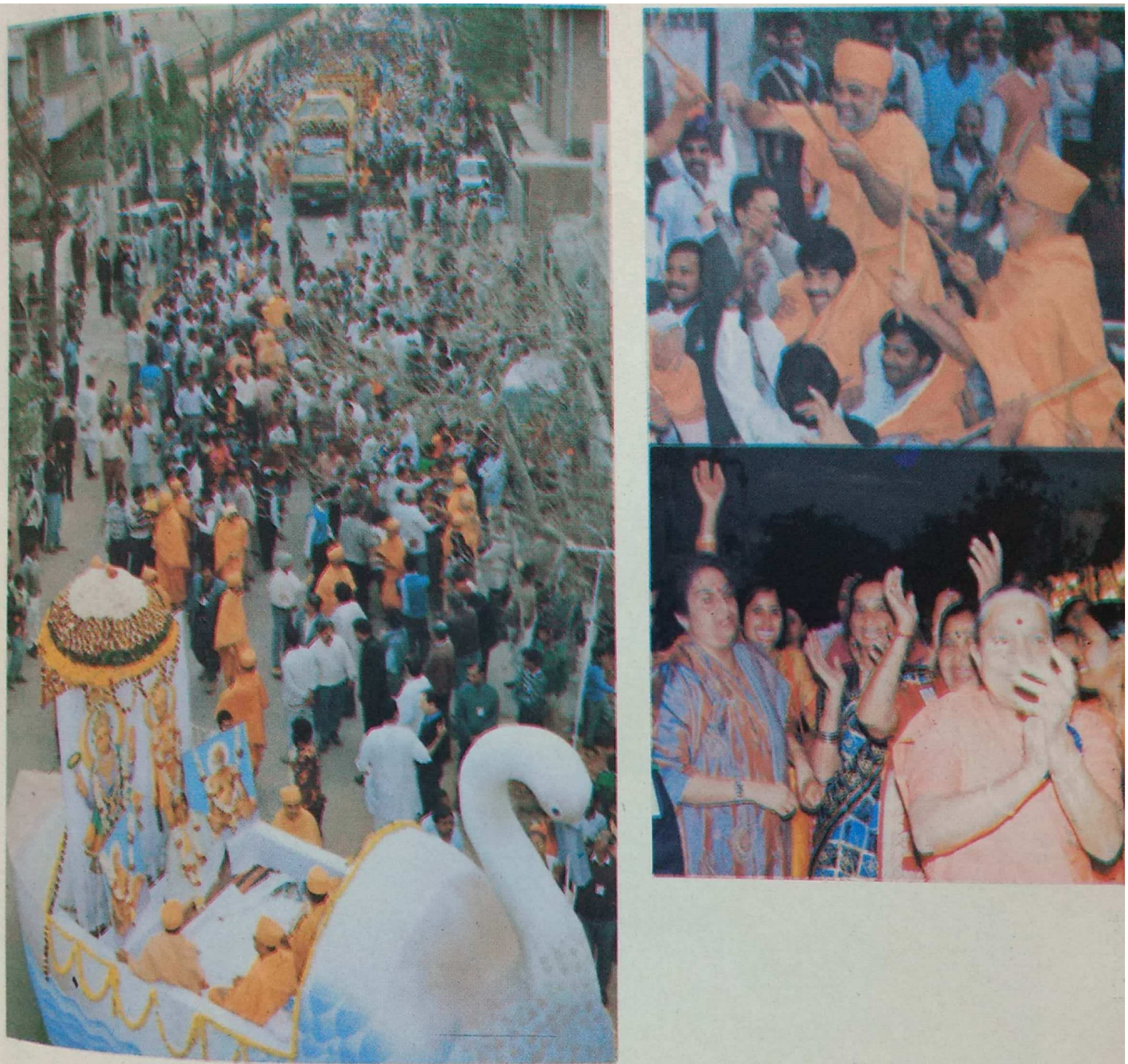

शोभा यात्रा......

शोभा यात्रा...

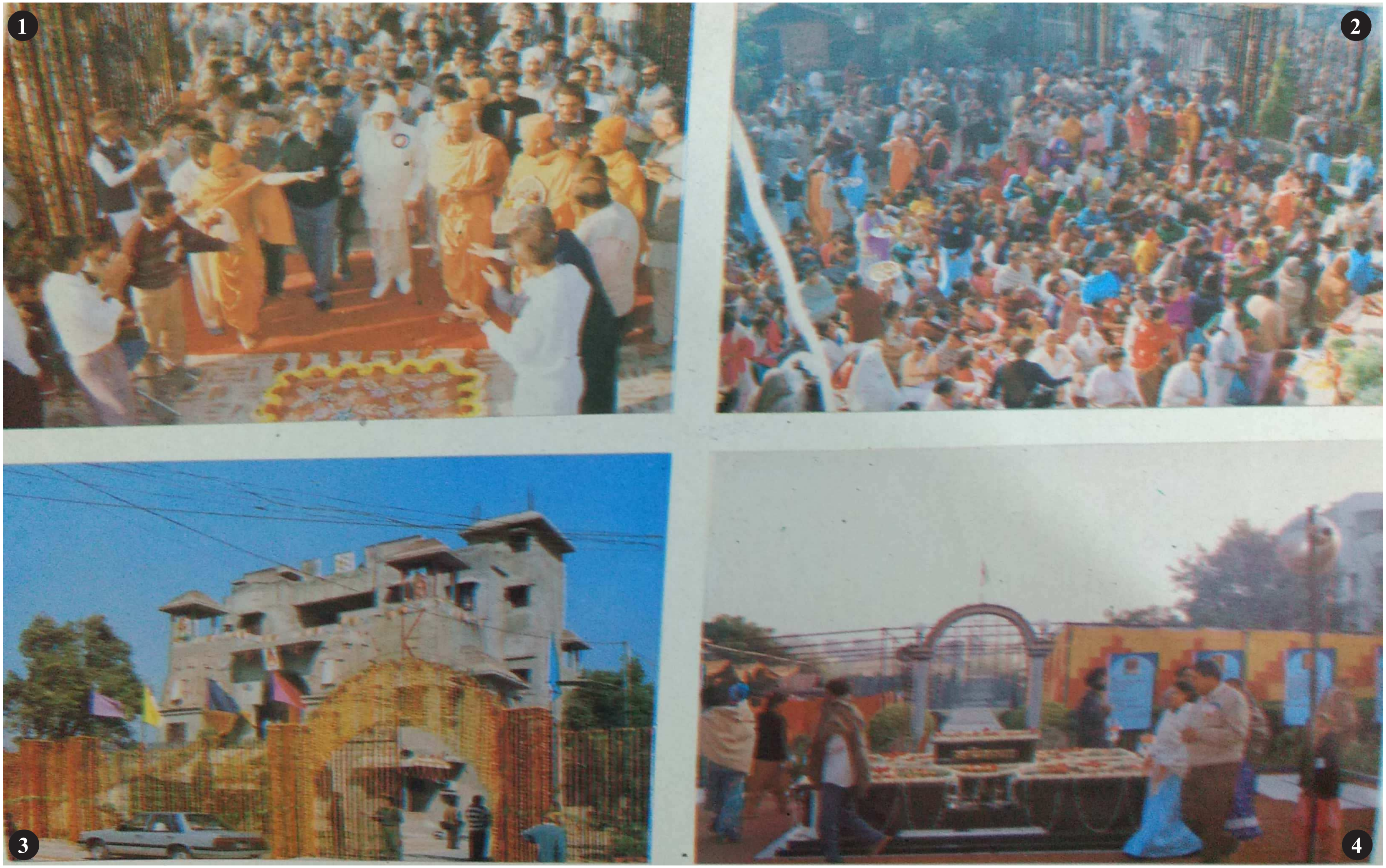

1. मूर्तिप्रतिष्ठा विधि हेतु प्रवेश करते गुणातीत स्वरूपों। 2. मूर्तिप्रतिष्ठा के समय मंदिर के प्रांगण में उमंग-उत्साह से भरे भक्तजन। 3. फूलों से सुसज्जित नवनिर्मित मंदिर। 4. ''स्मृति स्थल'' - फूलों से सजाया प.पू. काकाजी का समाधि स्थान।

मूर्तिप्रतिष्ठा विधि करते हुए.....

1. अमृतपर्व की सभा में भक्तिभाव से एकत्रित भक्तजन। 2. अमृतपर्व की सभा में पधार रहे मुख्य अतिथि दिल्ली के उपराज्यपाल मा. श्री पी.के. दवे साहेब। 3. मा. श्री एच.के. एल. भगत साहेब को प.पू. काकाश्री की मूर्ति भेंट करते हुए पू. गुरुजी। 4. अक्षरधाम की सभा...

1. चैतन्यजननी प.पू. बा का स्वागत करती पू. आनंदी दीदी। 2. प.पू. हंसा दीदी का स्वागत करती पू. बंसरी। 3. प.पू. ज्योती बहन का स्वागत करती पू. बंसरी। 4. प.पू. बहन का स्वागत करती पू. निशि दीदी। 5. पू. शीला आंटी के साथ पू. प्रेम बहन।

प. पू. साहेब

प. पू. पप्पाजी

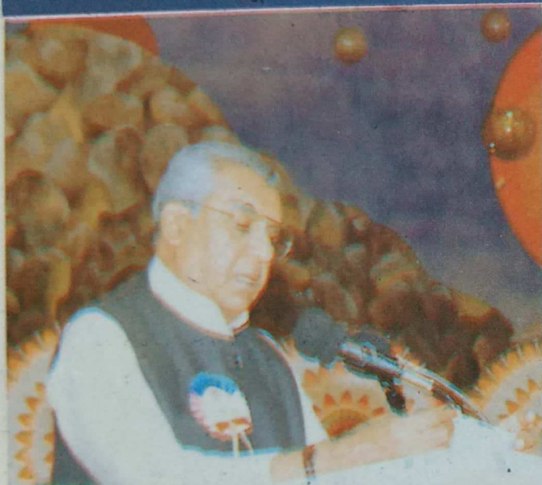

प. पू. सनत महेता साहेब

प. पू. हरिप्रसादस्वामिजी

प. पू. हरिभाई साहेब

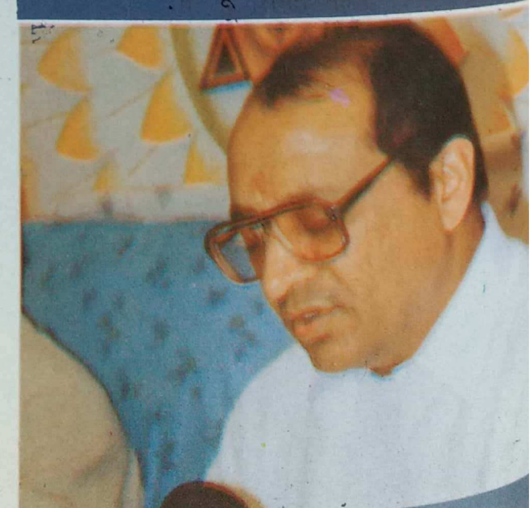

प. पू. दिनकर भाई

1955 से मैं योग में आया, उनका बड़ा business, वो खत्म हो गया......1954-55 में वो पारिवारिक struggle शुरू हो गई।...court का case........पाँच सात साल तक वो केस चला। फिर internal संघर्ष हुआ, फिर साधु बनाने में संघर्ष आया, फिर बहनों के problem में संघर्ष........फिर हम लोग सोखड़ा-विद्यानगर पहुँच गए-सारा जीवन में संघर्ष ही संघर्ष.....

काकाजी के जीवन में हर एक पल में, हर एक सैकेण्ड में, हर एक मिनट के वे संघर्ष में, हर एक प्रसंग में, हर एक परिस्थिति में उनके जीवन में से एक रणकार निकलता था। एक आवाज निकलती थी- **'कौन मिला है?'**

काकाजी के शब्द को कभी भूलना मत। गुरूजी यही शब्द के base ऊपर जीवन जीया-जी रहा है। हमारे जीवन में प्रभु की निष्ठा-भगवतस्वरूप संत के प्रति निष्ठा प्रीति-मनबुद्धि के पर का विश्वास......एक निष्ठा अनिवार्य चीज़ है।

पू. काकाजी का एक सूत्र दूसरा था-Always live with Him, with योगीजी महाराज। Always Live with God प्रभु को साथ रखकर चलो, स्वामिजी (बापा) को साथ रखकर चलो। काकाजी ने ये जीकर दिखाया है। हम जीते है-मन के साथ, हम बोलते हैं-बुद्धि से, हम देखते है-बुद्धि से......पू. काकाजी की दस इन्द्रियाँ व चार अंतःकरण योगीजी महाराज में डूबा हुआ था। योगीजी महाराज के अल्प संबंध वालों, सब छोटे-बड़े सब A to Z के साथ आत्मीय बनकर काकाजी जीये। पू. काकाजी ने हर्षदभाई में भी स्वामी (बापा) देखे, छगनभाई में भी स्वामी (बापा) देखे, उपेक्षा करने वाले में भी स्वामी (बापा) देखे....एक ही आकार था। बस एक ही आधार था, एक ही वो दिव्य पुरुष की अनन्य शरणागति थी......

गुरूजी ने काकाजी का सेवन किया। 'मेरा मन नहीं मानेगा मगर हे काकाजी ! I will follow only you and you–ऐसा गुरूजी ने दृढ़ ठहराव कर लिया। कैसी वो पू. काकाजी की दिव्य प्रतिभा.....वो अद्भुत दिव्य व्यक्तित्व। पू. अक्षरविहारीस्वामिजी ने बहुत अच्छी बात कह दी short & sweet में....दिल्ली की धरती पर जीवंतपात्र काकाजी रख गये है..... मंदिर बनने वाले ही हैं........मगर जो चैतन्य मंदिर....धन्य हो स्वामिनारायण को......पृथ्वी पर आकर एक जीवंत प्रणालिका-एक पवित्र धर्म का, एक निष्काम धर्म का , गंगा की तरह एक पवित्र बहता प्रवाह अखंड रखा......जीवंत ज्योत रखी। काकाजी ने दिल्ली वालों को गुरूजी भेंट में दिया है। गुरूजी के साथ ऐसी एक मैत्री, ऐसी एक प्रीति.......गुरूजी के साथ मन-बुद्धि के पार जाकर एक सच्चा विश्वास रखकर मैत्री रखना....आप लोगों का जीवन धन्य हो जाएगा।

आज दिल्ली के समाज में उत्थान हो रहा है.... काकाजी के संकल्प से जीवनमुक्त के रूप में मल्कानी परिवार आ गया। आत्मीयता और सुहृद्भाव गुणातीत भक्ति का प्राण है......वह आत्मीयता बहती रहे... बहती ही रहे। संबंध वाली दृष्टि आती ही रहे.... आती ही रहे.......हम संबंध से जी सके ऐसी निष्ठा जीव में दृढ़ होती रहे-होती रहे इसलिए भगवान स्वामिनारायण, गुणातीत, शास्त्रीजी महाराज, योगीजी महाराज, काकाजी, पप्पाजी, साहबे, स्वामिजी सब के चरणार्विंद में एक ही प्रार्थना-मन-बुद्धि से पार जाकर गुरूजी के साथ आपकी ऐसी मैत्री दृढ़ होवे। आत्मीय बन के, अंतर में परमशांति-परम आनंद के साथ आप संसार में अच्छी तरह जी सको ऐसा बल-बुद्धि प्रभु और गुणातीत पुरूषों दें..... ऐसी अन्तर से प्रार्थना।

–प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी, हरिधाम

★ ★ ★

सच में बापु, भाई और स्वामी ने काकाजी का हार्द-स्वरूप दर्शन बताया। यथार्थ स्वरूप दर्शन-साक्षात् स्वरूपों काकाजी को ऐसा जैसा पहचानता था वो सब स्वामिजी, अक्षरविहारीस्वामिजी और बापु ने बतलाया। अभी वो सब सुना, अभी काकाजी का स्वरूप गुरुजी है, मुकुंदजीवनस्वामी है।

मुकुंदजीवनस्वामी की मूर्ति यथार्थ गढ़कर काकाजी ने समाज पर बहुत कृपा करी है। काकाजी स्वरूप बन गया है really! स्वामिजी ने यथार्थ कहा कि मुकुंदजीवन का जीवन बनाकर काकाजी ने क्या रूपांतर कर दिया? पारस, अक्षरपुरुषोत्तम का सत्संग ऐसा है कि जो जीव को नजर में लेता है उसको पारस से पारस बना देता है। काकाजी ने ऐसा पारस से पारस दिनकरभाई को, बापु को और गुरूजी को बना दिया। अब दिल्ली को-काकाजी के मन में, हृदय में दिल्ली का स्थान था। दिल्ली में एक सर्वोपरि सत्संग स्थापना, मूर्ति स्थापना, मंदिर का संकल्प था। वो गुरूजी स्वयं को सारे गुण दिए, पारस लड़का बनाया, मानसपुत्र बनवाया और जो-जो इधर बनता है वो काकाजी मुकुंदजीवन को निमित्त बनाकर बनाता है। मुकुंदजीवनस्वामी को जो मदद करता है, उसको साथ देते है वो really काकाजी को ही साथ देता है। काकाजी का चैतन्य जाता नहीं है। वो विलीन हो जाता है, सब में सम्मिलित हो जाता है। मुंबई में, शिकागो में और इधर दिल्ली में भी सब जगह काकाजी प्रगट ही है। आपने सुना, बहुत सुना और तभी तो मुकुंदजीवनस्वामी का अनुवृत्या-भक्ति करके उन्हों की आशीष लेकर आब सब पारस से पारस-जैसा मुकुंदजीवन हो गया काकाजी का-ऐसा मुकुंदजीवन का आशीर्वाद से, प्रसन्नता से पारस हो जाओ इतनी प्रार्थना और आशीर्वाद।

–प.पू. पप्पाजी

★ ★ ★

काकाजी बहुत बार दिल्ली आए। कुछ न कुछ programme बना के वो दिल्ली आते रहते थे.....दिल्ली के समाज का आज जो दर्शन हमें हो रहा है वह उन्होंने जो तकलीफ उठाई और जो काम किया उसका फल हम देख रहे हैं। उन्होंने जो कार्य किया है उनके जो गुण, महिमा हम गाते रहे हैं वह हमारे जीवन में सहज बन जाए, वह गान केवल गान न रहे मगर हमारा जीवन बने यही प्रत्यक्ष स्वरूपों के चरणों में प्रार्थना है।

गुरूजी ने सुबह मुझे एक बहुत अच्छी बात बताई कि–काकाजी की एक मूर्ति जिसमें काकाजी bus में travel कर रहे हैं। सभा हॉल में वह मूर्ति रखनी है ताकि हम भूलें नहीं कि हम भले आज imported गाड़ियों में फिरते हैं, पर जब भी वो मूर्ति देखे तो याद आ जाए कि काकाजी ने दिल्ली का निर्माण करने के लिए कैसी-कैसी तकलीफ उठाई हैं।

.....यूं उनको जो श्रद्धा थी, विश्वास था शास्त्रीजी महराज के संकल्प को साकार करने के लिए वह उन्होंने गुरूजी से यो पूरा करवाया और उसके लिए आय ये सब सब जो सेवा में लगे हैं, दौड़भाग कर रहे हैं उसमें काकाजी को जो महिमा गुरूजी ने ये भक्तो में जाग्रत की है वह दिखाई दे रही है।

–पू. भरतभाई, बम्बई

★ ★ ★

काकाजी एक युगपुरूष के रूप में आज हमारे सब के अंतर में उभर आए हैं। हमारा संबंध पहले योगीजी महाराज के साथ हुआ। योगीजी महाराज की कृपा से हम सब का संबंध काकाजी के साथ हुआ। एक बात हम सब को उन्होंने सिखाई-योगीजी महाराज जो कहा करे-आप किया करो। कोई शंका मत लगाओ इसमें। काकाजी बाहरी रूप से जो दिखाई पड़ते थे वैसे अंतर स्वरूप उनका नहीं था।

काकाजी बताया करते थे कि भावात्मक एकता दृढ़ करो। अभी बम्बई में काकाजी का अमृतमहोत्सव मनाया तो वहां भावात्मक एकता का दर्शन हुआ। योगीजी महाराज का जो जीवन था, योगीजी महाराज के हृदय में जो बात थी, जो भावना थी वह भावना प्रगट करने में काकाजी ने सारा जीवन अपना बिताया। उनका जीवन हमने बहुत नजदीक से अनुभव किया है, उनके जीवन में योगीजी महाराज के सिवा और कुछ नहीं था।

–पू. शांतिभाई, विद्यानगर

★ ★ ★

.......जो time पर जो भगवान का स्वरूप या कोई युगुपुरुष जो बात करता है वह हम लोग बहुत देर से समझ पाते हैं। बहुत देर बाद उसे accept कर सकते हैं। परन्तु काकाजी महाराज को पहले से वह Vision था। शास्त्रीजी महाराज ने जब बोला-1948 में-कि दिल्ली में मंदिर होगा.......तभी वो time पर तो ऐसा था कि यहां कैसे मंदिर हो सकता है? कोई था ही नहीं, लेकिन काकाजी को Vision था कि शास्त्रीजी महाराज जो बोलते हैं वह सच होता ही है। तो उन्होंने वह पकड़ लिया और कैसे भी करके विपरीत संजोगों में-जिसका कोई वर्णन नहीं हो सकता है ऐसी परिस्थितियों में-ऐसी struggle में इन्होंने यह सब करा।

सब कुछ हो सकता है लेकिन पाँच जन हिलमिल कर के काम करना बहुत मुश्किल है......वह हमारे से नहीं होता है। पू. काकाजी कहते थे-पाँच हरिभक्त के साथ, पाँच भगवदी के साथ सत्संग में और जहाँ काम करते हो........जहां रहते हो..........वैसे तत्त्व से साथ आप मिल-जुल कर काम करो तो भगवान की शक्ति प्रगट हो जाएगी.......

–पू. वशीभाई, बम्बई

★ ★ ★

पू. काकाजी बहुत बार कहते कि तुम ब्रह्मरूप होकर बर्तो, योगीजी महाराज तुम्हारे अंदर साक्षात रहे हैं ऐसा मानकर जीयो। काकाजी ऐसा विश्वास हमें देते ही थे कि तुम भगवान के संबंध में आए तब से तुम ब्रह्मस्वरूप ही हो। तुम धाम के ही हो ! पर अपना मन-बुद्धि इस बात को मानने नहीं देते.......

पू. काकाजी कई बार कहते कि तुम्हें भूख नहीं है, तुम्हें इस बात की गरज नहीं है, नहीं तो अभी कराने वाले तुम्हारे सामने बैठे ही हैं-ऐसा काकाजी बोलते। ऐसी कोई भूख हम सब में जागे। आप कराने ही विराजमान हो। तो ऐसे इस मंगलदिन पर हम सब पर कृपा करना।

–पू. कोठारीस्वामिजी, हरिधाम

★ ★ ★

आज यह दिल्ली में अक्षरपुरुषोत्तम के मंदिर की जो स्थापना हो रही है वह बहुत बड़ी बात है। इस सभा की बहुत बड़ा महिमा है। काकाजी की यह परम दिव्य कृति है जिसकी गुरूजी को सूत्रधारा सौंप दी है। उसका आज से बड़ा सम्मान हो रहा है-गुणातीत कभी भी जाते नहीं है। गुणातीत स्वरूप इधर अखंड रहते ही हैं हमें वो ढूंढने की जरूर प्रार्थना करनी पड़ती है......

सत्संग में खुले दिल से आना है। यहां आकर कुछ ऐसा लेकर जाना है जो हम हमारे दिल में कायम के लिए बैठ जाए.... सर्वदेशीय ज्ञान, सर्वदेशीय समझ, आध्यात्मिक stage में आगे बढ़ने का समय पर बहुत आता है......वह समझ जब पक्की हो जाएगी तब बहुत easy हो जाएगा।

एक बार माधवस्वामी के birthday पर एक कार्ड बनाया था। कार्ड में जगह न होने के कारण पू. पप्पाजी की मूर्ति वहां नहीं लगा सके थे। पू. काकाजी को जब कार्ड दिखाया तो पू. काकाजी एकदम बोले-आपने यह क्या किया? ऐसा कोई भाव नहीं था कि पप्पाजी की मूर्ति नहीं रखनी, पर जगह नहीं थी और पप्पाजी भी हमारे ही है उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ने वाला इससे। कार्ड और अच्छा ऐसे बनेगा.....परन्तु काकाजी चाहते थे कि पप्पाजी कि मूर्ति भी होनी ही चाहिए। वे बोले-आप अभी नहीं बिठाओगे तो पीछे disturbences आयेंगे.....तकलीफें आयेंगी। सर्वदेशीय समझ में यह बड़ी जरूरी चीज है। छोटी मूर्ति करो, बड़ा कार्ड करो, कुछ भी करो मगर सब को साथ में बिठाओ।

......महाराज के time पर भी मंदिर बन रहे थे। पर महाराज ने पहले 30 साल तक सत्संग ही करवाया। मंदिर की बात नहीं उठाई थी क्योंकि जब सत्संगी लोग तैयार होंगे तब ही मंदिर की प्रतिष्ठा बढ़ेगी.....काकाजी ने भी, गुरूजी ने भी इधर ये किया है। एक समाज तैयार होने के बाद अब ये मंदिर बन रहा है। मंदिर बनने के अंदर भी खुशी की बात है कि हमारे यह मल्कानी कुटुंब ने बहुत साथ दिया.....गुरूजी से दिव्यभाव रखकर ये सब की जो सेवा कर रहे हैं वह बहुत बड़ी सेवा है। उसके दिल में एक ही धड़कन है कि

मैं गुरूजी को कैसे राजी करूँ? आज उनके मित्र को भी लाए हैं......

—पू. दिनकरभाई, शिकागो

★ ★ ★

बहुत मंगलकारी पर्व हम मना रहे है। खूब खुशी की बात है। 212 साल पहले स्वामिनारायण भगवान यू.पी. में प्रगट हुए। छपैया और अयोध्या में रहे और सारा भारत वर्ष की परिभ्रमण करके गुजरात की भूमि में आए। आत्मा को यहीं मानवरूप में ही प्रभु के धाम के सुख, शांति व आनंद मिले ऐसी साधना करने के लिए गुजरात को स्वामिनारायण भगवान ने कार्यक्षेत्र बनाया-Laboratory बनाई। आत्मा के कल्याण के साथ-साथ स्वामिनारायण भगवान ने पिछड़े हुए सब मानव जो पशु के रूप में जी रहे थे उनको अपना प्रेम देकर, ज्ञान देकर उनको सही अर्थ में मानव बनाए। इनमें से संत बनाए और आत्मा का कल्याण भी किया। 49 साल की आयु में बहुत काम किया और उसके बाद में भी स्वामिनारायण भगवान ने वरदान दिया है कि मैं ये पृथ्वी पर से जाऊंगा ही नहीं। ऐसे गुणातीत साधु के रूप में पृथ्वी पर अखंड रहूँगा। यह जो कार्य चल रहा है वह चलता ही रहेगा और हम देखते हैं कि उसके बाद गुणातीतानंदस्वामी आए, भगतजी महाराज, जागास्वामी, अदा शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज। जिनकी हमने last year centenary मनाई। सोखड़ा और गांधीनगर में-बहुत उत्सव हुआ।

योगीजी महाराज ने बहुत कृपा करी और 3 Feb. 1952 में काकाजी को साक्षात्कार करवाया......साधु संतों की सेवा करने वाले बहुत होंगे। प्रभु की सेवा करने वाले बहुत निकलेंगे। लेकिन पू. काकाजी ने भक्तजन-नंदाजी की सेवा करी उससे प्रसन्न होकर काकाजी को 72Hrs. की समाधि-जिसको हम बोलते हैं कि साक्षात्कार हुआ। वह समाधि में काकाजी ने देखा कि जो प्रभु की हम आराधना कर रहे हैं-प्रभु के सुख, शांति, आनंद के लिए हम साधना कर रहे हैं-वह प्रभु हमारे साथ मानवस्वरूप में है और वह योगीजी महाराज है। पहली बार पू. काकाजी ने यह बताया और वहां से गुणातीत समाज की शुभ-शुरुआत हुई। फिर पप्पाजी आए, स्वामिजी आए, अक्षरविहारी स्वामिजी आए, भाई आए। सब ने इकट्ठे होकर यह सारा गुणातीत समाज बनाया। नंदाजी जब cabinet Minister के रूप में दिल्ली आ रहे थे तब गुरूवर्य शास्त्रीजी महाराज के पास आशीर्वाद लेने के लिए गये तो शास्त्रीजी महाराज ने अक्षरपुरूषोत्तम महाराज की मूर्ति दी और कहा कि आप जाओ दिल्ली में-अक्षरपुरुषोत्तम महाराज बैठानें है और वह काम करने हम देखते है कि 69 में काकाजी ने गुरूजी को दिल्ली भेजे। हम देखते हैं गुणातीत स्वरूप क्या है? प्रभु ने जो कार्य का आरम्भ किया हो वह कार्य को बढ़ाते चले वही गुणातीत स्वरूप का लक्षण है। काकाजी ने शास्त्रीजी महाराज का संकल्प साकार करने गुरुजी को पसंद किया और गुरूजी को भेजे।

गुरुजी इधर आए, साधु समाज के मकान में रहते थे। कोई हरिभक्त भी नहीं था। कई लोग बोलते थे क्यों खाली दिल्ली में time बिगाड़ते हो? खाने-पीने का सब पैसा काकाजी को बम्बई से भेजने पड़ते है। ऐसे-ऐसे शब्द बोलने वाले थे-मुकुंदजीवन ने ऐसे कार्य बंद नहीं कर दिया। वह बहुत बुद्धिमान है वो भी देखते थे कि दिल्ली में कुछ है नहीं। पर हृदय में एक भावना थी कि काकाजी ने मुझे भेजा है, काकाजी की आज्ञा पालने के लिए इधर आया हूँ। कोई आए या न आए उससे मुझे कोई संबंध नहीं है। मेरा इधर रहना वही मेरी भक्ति है। काकजी की आज्ञा के मुताबिक मेरा जीवन बनाना वही मेरी भक्ति है। 69 से उसमें पप्पाजी ने साथ दिया, हरिप्रसादस्वामिजी ने साथ दिया। उनके साथ प्रेमस्वामी वगैरे सब संत लोगों ने भी बहुत बड़ा साथ दिया। और हम देखते हैं कि 69 से गुरूजी अब जंगमतीर्थ हो गए। अब ये स्थावर तीर्थ बन जाएगा। स्थावर तीर्थ एक जगह रहते हैं जहां हमें जाना पड़ता है, जंगमतीर्थ चलता फिरता रहता है। वो हमारे पास आता है। वो दोनों तीर्थ का संगम अब हो रहा है। दिल्ली के लिए यह बहुत बड़ी बात हो रही है।

यह बहुत अच्छा हुआ कि खुराना साहेब भी यहाँ आए है। दिल्ली स्वतन्त्र राज्य बना है और first state

हुआ और मंदिर की प्रतिष्ठा हुई है और first Chief Minister हैं खुराना साहेब। संस्कारी मुख्यमंत्री है। इधर आए तो मैंने देखा सबको प्रणाम किया फिर नीचे बैठने के लिए जाते थे। सब गद्दी के लिए दौड़ते हैं। इन्होंने देखा कि यह धर्म सभा है। यह इनकी खानदानी, संस्कृति, संसार की बात है। गुरूजी ऐसे साधु इधर हैं-शास्त्रीजी महाराज का संकल्प काकाजी के द्वारा गुरूजी के द्वारा हो रहा है। मल्कानी साहेब, दालिया साहेब और अनिल ये सब लोगों ने अग्रवाल साहब सब ने बहुत समर्पित भाव से गुरूजी के कार्य को बहुत-बहुत आसान बना दिए। हम सब को युवानों की चिंता इन्हें संस्कारी करने के लिए, उनको educated करने के लिए उनको अच्छे बनाने के लिए रात-दिन एक लगन से संतों निकल रहे हैं। यूं साधु संत का बहुत बड़ा प्रदान है। वह दिखाई नहीं पड़ता......

—प.पू. साहेब, विद्यानगर

★ ★ ★

मुझे थोड़ा संकोच हो रहा था क्योंकि मेरी यह मान्यता हैं कि इस तरह के धार्मिक उत्सवों में केवल महापुरूषों के, सतों के, महात्माओं के ही विचार लेना चाहिए। ऐसा नहीं है कि मैं भाषण नहीं देना जानता हूँ। मैं भाषण बहुत अच्छा दे लेता हूँ लेकिन ऐसे उत्सवों के ऊपर महापुरूषों के ही विचार सुनने को मिलने चाहिए, सत्संग तभी होता है। हमारे देश की यह परंपरा रही है। हमने कभी राजा की पूजा नहीं की है। हमने पूजा की है त्यागियों की, तपस्वियों की, गुरूओं की, साधुओं की। हम राम की पूजा राजा के रूप में नहीं करते है, हम उस राम की पूजा करते हैं जो राज को ठोकर मारकर 14 वर्ष बनवास गए। हम कृष्ण की पूजा राजा के रूप में नहीं करते हैं, हम उस कृष्ण की पूजा करते हैं जिन्होंने अर्जुन को गीता का उपदेश दिया......

जब तक इस देश में यह परंपरा रही कि राज के ऊपर धर्म का स्थान रहा यह देश ठीक चला, लेकिन आज एक फैशन बन गई है धर्म को दूर रखो राज से। धर्म हमको सिखाता है पाप क्या है, पुण्य क्या है? उसके अंदर भेद क्या है? तुम जो कर रहे हो, उचित कर रहे थे यह हमको धर्म सिखाता है। आज हमने राजनीति को महत्व दिया, गोपनीय राजनीति को महत्व देकर के अपने धर्म को दूर करते जा रहे हैं यह देश उतना ही अंधकार की ओर बढ़ रहा है।

.......ये मंदिर के लिए.......मैं आपको विश्वास क्या दिलाऊं, विश्वास तो एक राजनैतिक भाषा हो जाती है। मैं अपने आपको सौभाग्यशाली मानूंगा अगर मैं किसी कार्य, सेवा के कार्य आ सका तो यह मेरा बहुत बड़ा सौभाग्य होगा.......मैं इन शब्दों के साथ एक बार पुनः बहुत आभार प्रगट करना चाहता हूँ कि जिन्होंने इतने सुन्दर, इतने शांतिमय वातावरण के अंदर और सत्संग के अंदर मुझे निमन्त्रण दिया और मैं यहां हाजिर हुआ। मैं इतना विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि जो भी मेरे लायक सेवा बक्शेंगे मैं अपने ऊपर ऋण समझ करके क्योंकि इन महापुरूषों का, इनकी तपस्याओं, इनका त्याग जैसे अपना घर-बार छोड़कर के ये जो हमारे धर्मरूपी चिन्ह हैं इनका हमारे ऊपर बहुत बड़ा अहसान है, ऋण है। उस ऋण को चुकाने के लिए अगर मैं ब्याज के रूप में एक-आद पैसा चुका सका तो मैं अपने आप का सौभाग्य मानूंगा।

—मा.श्री मदनलाल खुराना साहेब

★ ★ ★

श्रीजी महाराज सर्वोपरि पुरुषोत्तम नारायण-प्रगट हुए। गुणातीत को साथ लाये और दोनों के संबंध में जो आए उनका कल्याण करने का निर्णय लिया। उसकी फलश्रुति के रूप में आज गुणातीत समाज का सर्जन हुआ। योगीजी महाराज ने श्रीजी महाराज का संकल्प झेला। काकाजी को 3 Feb. को साक्षात्कार कराकर काकाजी और योगीजी महाराज दोनों ने मिलकर एक बड़े गुणातीत समाज को अस्तित्व में लाए। हमको ख्याल नहीं है कि गुणातीत क्या है? लेकिन really! ब्रह्मनियंत्रित समाज-सारी योनि बदल गई। बुद्धि प्रधान समाज था ही, है भी। सारी दुनिया बुद्धि प्रधान है। कोई न कोई ism के मुताबिक चलता है। लेकिन बुद्धि से पर जो आत्मा है। उस आत्मा के मुताबिक चले तो मानव सुखी हो जाए। यह सुखी होने की रीति योगीजी महाराज ने शुरू करने के लिए पहले नेता तैयार करे। जो अखंड 24 घंटे प्रभु को धार कर जीता हो। प्रभु का ही काम करता हो, ब्रह्मनियंत्रित

ही वर्तता हो। ऐसे संतों, बहनों, युवकों और गृहस्थों चारों प्रकार से पूरा करा। यह काकाजी और स्वामिजी (बापा) दोनों ने मिलकर योग्श्वर बनाये, बहनें ऐसी तैयार करी, ऐसे गृहस्थ तैयार करे और ऐसे साहेब जैसे व्रतधारी युवकों तैयार करें......जैसे गुरुजी ने काकाजी का वचन बुद्धि से उतरे कि न उतरे, तब भी काकाजी ने जैसा कहा वैसा करा-अच्छा लगे चाहे न लगे। बहुत जनों के दिमाग में नहीं उतरा था, काकाजी ने जब मुकुंदजीवन-गुरुजी को दिल्ली जाने के लिए कहा तब। लेकिन गुरुमुखी जीवन ही हमारी प्रणाली है। काकाजी ब्रह्मस्वरूप थे और वे यह दिल्ली में जबरदस्त बड़ा मंदिर करने की राह देखते थे.....

......दिल्ली राजधानी है। दिल्ली में एक भव्य मंदिर बनना चाहिए अभी इसका उद्घाटन स्वामिजी करेंगे। काकाजी का संकल्प पूरा हुआ। काकाजी का मुख्य संकल्प था कि ऐसा भव्य मंदिर हो और मुकुंदजीवन ही कर सकेगा और देखते हैं कि आज काकाजी के अमृतपर्व के दिन पर मूर्तिप्रतिष्ठा हो रही है। दुनियाभर के मुक्त यहां देखने आए, दर्शन करने आए और प्राप्ति हो तो सच में बहुत अच्छी बात है। धन्यवाद हैं मुकुंदजीवन को, गुरुमुखी जीवन जीए और यह गुणातीत समाज आज काकाजी का अमृतपर्व मना रहा है। गुणातीत समाज का सर्जन काकाजी ने करा। स्वयं अखंड 24 घंटे बस भगवान को रखकर-योगीजी महाराज को रखकर जीये। आज एक प्रार्थना करनी है कि जगत से हम एकदम अलग हैं। हम मानें ही कि हमारे में नियंत्रण योगीजी महाराज का चलता है। योगीजी महाराज स्वरूप.....हरिप्रसाद, अक्षरविहारी, साहेब, काकाजी, बा, बहन, गुरुजी उनके कारण ही चलता है......योगी स्वरूप ही गुरुजी को माने। और गुरुजी के सामने दो हाथ जोड़कर वे जो कहें उनके सामने बुद्धि और दिल बंद कर दें जैसे कल हरिप्रसादस्वामिजी ने कहा वैसे और उनकी अनुवृत्ति में भर जाए और परम सुखी होए।

हम कितने भाग्यशाली कि गुरुजी यहां मिले जिन्हें ब्रह्म की, काकाजी की अनुवृत्ति का मालूम है। काकामय ही जीवन जीते हैं। काकाजी ब्रह्मस्वरूप थे इसलिए ये भी ब्रह्मस्वरूप हैं। तीन जने थे उसमें से इतना बड़ा समाज हो गया कारण यह कि गुरुजी को दिव्य और निर्दोष मानकर जो वह कहे वह करो-उस सेवा के फलस्वरूप हम सब इतने सुखी हुए है। वैसे गुरुजी की अभिप्राय की भक्ति से भर जाएं और सब गुरुजी जैसे सुख भोक्ते हो जाएं यही अन्तर की प्रार्थना और आशीर्वाद !

–प.पू. पप्पाजी

★ ★ ★

Note- अमृतपर्व की मुख्य सभा 3 feb.'94 के मार्मिक भावात्मक उद्गारो....अगले अंक में।

Statement about Ownership and other particulars about news paper

'भगवत-कृपा'– 'THE DIVINE GRACE'

(Form IV Rule 8)

1. Place of Publication	:	Yogi Divine Society A-103, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052
2. Periodicity of its Publication	:	Monthly
3. Printer's Name	:	Sadhu Mukund Jivandas
Nationality	:	Indian
Address	:	Yogi Divine Society A-103, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052
4. Publisher's Name	:	
Nationality	:	As above
Address	:	
5. Editor's Name	:	
Nationality	:	As above
Address	:	
6. Owner's Name	:	
Nationality	:	As above
Address	:	

I, Sadhu Mukundjivandas, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Sd/-**Sadhu Mukundjivandas**
Signature of Publisher

Date: 25th Feb, 1994

विज्ञप्ति

(प्रेम से परोसो थाल प्रभु को....)

''उत्तरभारत में भगवान स्वामिनारायण का संदेशा फैले व भारत की राजधानी दिल्ली में भगवान स्वामिनारायण अक्षरपुरुषोत्तम की मूर्ति स्थापित हो........''

1948 में गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज ने व 1969 में गुरुहरि योगीजी महाराज ने किया संकल्प उनके वारिसदार पनौते पुत्र ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी की प्रेरणा व संतमंडल के अनहद् परिश्रम से 3 feb.'94-प.पू. काकाजी महाराज के अमृतपर्व के अवसर पर उनके ही साक्षात्कार दिन के महामंगलकारी दिन साकार हुआ.......राजधानी दिल्ली में अशोकविहार स्थित स्वामिनारायण मंदिर में अक्षरपुरुषोत्तम महाराज के सर्वप्रथम मूर्तिप्रतिष्ठा खूब धूमधाम से हुई.........

यह सेवा का कलश गुणातीत समाज पर ढला..........ब्र.स्व. स्वामिश्री शास्त्रीजी महाराज ने उनकी सेवा का यह मौका हमें दिया इससे अधिक और कृपा क्या हो सकती है इनकी?

मंदिर में भगवान स्वामिनारायण, मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी, ब्र.स्व. स्वामिश्री शास्त्रीजी महाराज, ब्र.स्व. स्वामिश्री योगीजी महाराज, गुरुहरि प.पू. काकाजी, गणेशजी, हनुमानजी की संगमरमर की व प्रगट स्वरूपों की ऑईल पेन्टेड लुभावनी मूर्तियाँ स्थापित हो गई ! सो, अब अवसर मिला है ठाकुरजी को थाल धराकर हमारी भावना व्यक्त करने का।

इसलिए आप थाल की तिथि/दिनांक बांध लें, जिससे कि हर वर्ष उस दिन आपकी ओर से ठाकुर जी को भोग लगेगा। सेवा निम्न प्रकार है-

★ वर्ष के किसी भी दिन के लिए-रूपये 1175/-

★ निम्न नौ दिनों के लिए-रूपये 11075/-

1. 23 जनवरी (ब्र.स्व.प.पू. योगीजी महाराज का निर्वाण दिन)
2. 3 फरवरी (ब्र.स्व.प.पू. काकाजी महाराज का साक्षात्कार दिन एवं दिल्ली मंदिर की मूर्तिप्रतिष्ठा का दिन)
3. वसंतपंचमी (ब्र.स्व.प.पू. शास्त्रीजी महाराज का प्राकट्य दिन)
4. 7 मार्च (ब्र.स्व.प.पू. काकाजी का स्वधामगमन दिन)
5. रामनवमी (श्रीजी महाराज का प्राकट्य दिन)
6. 13 अप्रैल (बैसाखी)
7. गुरुपूर्णिमा
8. शरद् पूर्णिमा (मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी का प्राकट्य दिन)
9. अन्नकूट

जिन्हें ठाकुरजी के थाल की इस सेवा की इच्छा हो वे अपनी निर्धारित तिथि/दिनाँक, अपना पूरा address व 1175/- या 11075/- रूपये की राशि दिल्ली मंदिर में योगी डिवाईन सोसाईटी के नाम प.भ. अविनाश चड्डाजी को भेज दें। आपकी **इस एक बार की सेवा से हर वर्ष निर्धारित तिथि को आपकी ओर से ठाकुरजी को थाल लगाया जाएगा।**

गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज और गुरुहरि योगीजी महाराज के संकल्पस्वरूप यह मंदिर हमारा अपना है हम सभी का है। इसकी सेवा यही तो हमारी उनके प्रति की भक्ति है और प्रभु ने हर एक को यह सेवा करने का सुवर्ण अवसर दिया है......आईये, आईये हम सभी इस सेवा को लूटकर जीवन धन्य करें......

–साधु मुकुंदजीवनदास व पू. भाईस्वामी के
हार्दिक जय स्वामिनारायण !

★ ★ ★

व्रतोत्सवसूची

1- दि.	24 मार्च, गुरुवार	–	एकादशी, व्रत
2- दि.	26 मार्च, शनिवार	–	पूर्णिमा, ब्र.स्व. प्रागजी भक्त का प्रागट्य दिन होलिका दहन
3- दि.	27 मार्च, रविवार	–	धुलेटी, होली, रंगोत्सव, प.पू. जशभाई साहेब की जन्म जयंती
4- दि.	6 अप्रैल, बुधवार	–	पापमोचनी एकादशी, व्रत
5- दि.	20 अप्रैल, बुधवार	–	रामनवमी, भगवान श्री स्वामिनारायण जयंती
6- दि.	22 अप्रैल, शुक्रवार	–	एकादशी, व्रत

PUBLISHED BY SADHU MUKUNDJIVANDAS FOR YOGI DIVINE SOCIETY
'Anirdesh', Ashok Vihar-III, Swaminarayan Marg, Kakaji Lane
Delhi-110052 (India) Tel.: 7229327, 7249327
Printed at : R.P. Printers, Shahdara, Delhi-110032 Phone : 7220332, 7138708

मूर्तिप्रतिष्ठा

एवं

प.पू. काकाजी के अमृतपर्व की स्मृतिरूप निकाली चाँदी की मुद्रा के यह दो पहलू हैं।

15 ग्राम की मुद्रा –	रूपये 150/-
25 ग्राम की मुद्रा –	रूपये 250/-

जिन्हें यह मुद्रा लेनी हो, वे योगी डिवाईन सोसाईटी, दिल्ली से प.भ. अविनाश चड्डाजी द्वारा प्राप्त कर सकते हैं।

अमृत पर्व
१९१८-१९९४